प्रश्न 52. संस्मरण विधा की प्रगति को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– किसी घटना, स्थल या व्यक्ति से सम्बन्धित अनुभूति लेखक के हृदय-पटल पर छाकर उसके मन को भीतर ही भीतर कुरेदती रहती है। यह अभिव्यक्ति के रूप में आकर संस्मरण बन जाती है। लेखक के जीवन में अनेक ऐसे क्षण आते हैं, जब ऐसे व्यक्तियों से उसका सम्पर्क होता है, जिन्हें वह जीवन भर नहीं भुला पाता। उनकी स्मृति की अनुदिन ही जो निधि बनकर अन्तराल में छिपी होती है, भावावेश में संस्मरण के रूप में छलक पड़ती है। संस्मरण लेखक के निजी जीवन की सत्य घटना पर आधारित होता है।

संस्मरण–साहित्य के क्षेत्र में सबसे पहले आचार्य चतुरसेन शास्त्री के संस्मरण हमारे सामने आते हैं। इनके संस्मरणों में जीवन के विभिन्न भावपक्षों, स्तरों, विचारों, के साथ-साथ राजनीति, संस्कृति, आदि युगपरक स्थितियों पर भी प्रकाश पड़ता है। 'पहली सलामी' संस्मरण में शास्त्री जी ने असेम्बली में भगत सिंह द्वारा बम फेंकने का आँखों देखा वर्णन किया है। 'लोकमान्य तिलक' संस्मरण में लेखक ने उनकी सम्पर्क की कटु मधुर स्मृतियों का जो चित्र प्रस्तुत किया है इसमें तत्कालीन राजनीति की उथल पुथल का चित्र भी प्रस्तुत हो गया है। मेरे 'बाल सखा शान्ति' में प्रसिद्ध वैज्ञानिक शान्तिस्वरूप भटनागर, 'उत्तर के खमेरु स्वामी श्रद्धानन्द', 'जब मैं उनसे मिलने गया' में जवाहरलाल नेहरु से एक भेंट, हाजी मुहम्मद अल्ला रखिया शिवाजी, ब्रजबल्लभ शर्मा, रामहरख सहगल, पं. लोटेलाल ऐसे ही संस्मरण हैं। 'साहित्य का मोड़', 'उत्तम जलकण', 'मुबलिग पाँच रुपये', 'श्री जैनेन्द्र का विवाह', 'ठण्डी हवायें', 'पैसठवाँ जन्म नक्षत्र', 'अड़सठ की देहरी से' आदि शास्त्री जी के साहित्यिक संस्मरण हैं।

Scanned with CamScanner

हिन्दी के संस्मरण लेखकों में रामवृक्ष बेनीपुरी का स्थान महत्वपूर्ण है। आपके संस्मरणों में विषय के वर्णन के साथ में स्वयं की अनुभूतियों का भी मार्मिक चित्रण हुआ है। ये पाठकों के हृदय में करुणा, सहानुभूति, हर्ष, विभोरता आदि उत्पन्न करने में समर्थ हैं। भाषा में सरलता और सहजता के साथ में तीखी व्यंग्यात्मकता भी मिलती है। आपके जेल जीवन के मार्मिक संस्मरणों की जंजीरें और दीवारें संस्मरण-संग्रह हैं।

हिन्दी-संस्मरण-साहित्य के क्षेत्र में महादेवी जी का शीर्ष स्थान है। महादेवी जी मूलतः कवियत्री हैं। यही कारण है कि आपके संस्मरणों में कवि हृदय की कोमलता, भावुकता और मधुरता मिलती है। 'चित्रोपमता', 'ध्वन्यत्मकता', लाक्षणिकता आदि से सजे होते हैं। 'अतीत के चल चित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी' और 'स्मारिका' (सन् 1971) आपके संस्मरण संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। महादेवी के रेखाचित्र संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं। वे व्यक्ति विशेष अथवा घटना विशेष के चित्रांकन मात्र नहीं हैं, अपितु उनकी व्यक्तिगत रागात्मक अनुभूति से आर्द्र हैं। उन्होंने स्मारिका- 'कुछ विचार' में लिखा है-

"मेरे संस्मरणों में रेखाचित्र भी मिश्रित हो जाते हैं। जिनका स्पष्ट कारण मेरा रेखांकन प्रेम ही कहा जायगा। व्यक्ति, वस्तु, घटना आदि को अपने रागात्मक परिधि में लाकर देखना मेरे स्वभाव के अनुकूल पड़ता है। क्योंकि उसी स्थिति में अनेक सुख दुखों से मेरा तादात्म्य सम्भव है।"

'अश्क' जी ने भी संस्मरण लिखे हैं। इनमें से कुछ संस्मरण शैली और कुछ पत्र और डायरी-शैली में है। 'साहित्यिक-संस्मरण' पुस्तक में किशोरीलाल बाजपेयी के साहित्यिक जीवन के सुन्दर, रोचक और कलापूर्ण संस्मरण हैं । इस पुस्तक के चार भागों में 1919 से लेकर सन् 1954 तक संस्मरण संकलित हैं। कन्हैयालाल 'प्रभाकर' के संस्मरण बड़े रोचक हैं। उनकी 'जिन्दगी मुस्कराई' सन् 1955 की सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पुस्तक मानी गई । इसके तैतालिसों संस्मरण सजीव, रोचक और प्रेरणादायक हैं। जैनेन्द्र जी पर लिखे संस्मरण में जैनेन्द्र जी की प्रकृति मूर्तिमान हो उठी है। आप 'नया जीवन', 'धर्मयुग' और 'ज्ञानोदय' पत्रिकाओं में बराबर संस्मरण लिखते रहते हैं।

इस युग के संस्मरण लेखकों में बनारसीदास चतुर्वेदी का भी महत्वपूर्ण स्थान है। संस्मरण नाम से आपके 21 संस्मरणों का संग्रह प्रकाशित हो चुका है। आपने अपने संस्मरणों में विविध क्षेत्रों से व्यक्तियों को चुना है। सम्बन्धित व्यक्तियों का अनुभूतिपूर्ण चित्रण होने के साथ ही उनके आसपास का सामाजिक वातावरण भी सजीव हो उठा है।

स्वतन्त्रता के पश्चात् पत्र-पत्रिकाओं में बहुत से संस्मरण प्रकाशित हुए। भगवतीप्रसाद बाजपेयी का 'महाराणा निराला', विनय मोहन शर्मा का 'लक्ष्मीधर बाजपेयी', देवेन्द्र सत्यार्थी का 'बलराज साहनी' आदि संस्मरण उल्लेखनीय हैं। 'नयासमाज', 'धर्मयुग', 'आजकल', 'विश्वदर्शन', 'ज्ञानोदय', 'राष्ट्रभारती', 'सरस्वती', 'अजन्ता', 'कल्पना' आदि पत्र-पत्रिकाओं में बराबर संस्मरण प्रकाशित होते रहते हैं। इस युग में नये लेखकों का ध्यान संस्मरण लिखने की ओर अधिक है। आधुनिक हिन्दी साहित्य की शीर्षस्था महादेवी भी इस क्षेत्र में पूर्ण रूप से सक्रिय हैं। अभी सन् 1971 में उनके आधुनिक संस्मरणों का संग्रह 'स्मारिका' नाम से प्रकाशित हो चुका है।

Scanned with CamScanner